International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

स्वातंत्र्योत्तर कवयित्रियों के काव्य में प्रेम और नारी

अंकिता मिश्रा पत्नी दिव्यांशु मिश्रा
117/P/347 हितकारी नगर काकादेव,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश : स्वतन्त्रतापूर्व कविता में जहाँ स्त्री का प्रेम आदर्शवाद, त्याग, समर्पण आदि के आवरण से ढँका हुआ था वहीं, स्वातंत्र्योत्तर कविताओं में यह छवियाँ टूटती हुई दिखती हैं । स्वातंत्र्योत्तर कविता में स्त्री व पुरुष के प्रेम की संवेदनाएं समान रूप से प्रकट होती हैं । यह वह समय था जब, कवियों के साथ ही कवयित्रियाँ भी अपने काव्य में स्व अनुभूतियों को खुलकर अभिव्यक्त करने लगीं । स्त्री होने के नाते जितनी गहराई से कवयित्रियाँ स्त्री-जीवन की जटिलताओं को समझ सकती हैं, उतना पुरुष रचनाकारों के लिए संभव नहीं है । यही कारण है कि, स्त्री-जीवन से जुड़े हर पहलू को इन कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में स्थान दिया है । प्रेम इन कवयित्रियों का प्रिय विषय रहा है । प्रेम के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पक्षों को इनकी कविताओं में देखा जा सकता है । प्रेम में पुरुष, प्रायः स्त्री को ही अपने अनुसार ढालना चाहता है । पति या प्रेमी की वर्चस्व बनाए रखने की यह चाहत धीरे-धीरे उनके मध्य के प्रेम की ऊष्मा को सोख लेती है और परिणामस्वरूप संबंधों में प्रेम का स्थान कड़वाहट ले लेती है । स्वातंत्र्योत्तर कवयित्रियों द्वारा लिखी गयी कविताओं में ऐसे ही न जाने कितने यथार्थ शब्दचित्र देखे जा सकते हैं ।

मुख्य शब्द : स्वातंत्र्योत्तर, कवयित्री, स्त्री, प्रेम, कविता, पीड़ा आदि ।

प्रस्तावना : कवयित्रियों के काव्य में प्रेम सदा से ही बहुत महत्त्वपूर्ण विषय रहा है । स्त्री लेखन के प्रारंभिक काल से अब तक की यात्रा पर दृष्टि डालने पर एक बड़ा अंतर नज़र आता है । मध्यकालीन कविताओं में स्त्री निर्वैयक्तिक रूप में सामने आती है जबकि आधुनिक युगीन कविताओं में विविध बिम्बों के माध्यम से अपने व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को खुलकर अभिव्यक्त करती है । स्वातंत्र्योत्तर कवयित्रियां उस समय से हैं जब स्त्री-वर्ग अपनी अस्मिता के लिए खुलकर संघर्ष कर रहा था । मध्यकाल में कवयित्रियों द्वारा राधा और गोपियों आदि के रूप में संकुचित

की गयी स्त्री अब माँ बहन, पत्नी और प्रेमिका रूपों में अभिव्यक्त होने लगी थी । अपने प्रेम व अपनी भावनाओं को खुल कर कहने लगी थी ।

सही अर्थों में देखा जाये तो प्रेम ही जीवन का सत्य है । प्रेम सदियों से मानव को प्रेरणा देता रहा है बस इसके रूप समय के साथ बदलते रहे हैं । इस प्रेम ने कभी स्त्री के होंठों पर मुस्कान दी है, कभी आँखों में आँसुओं की नमी भी दी है । प्रेम के विविध रंग मिलन, बिछोह, प्रतीक्षा, समर्पण, भावुकता आदि अपनी संवेदनात्मक अनुभूतियों के साथ इन कवयित्रियों की प्रेम कविताओं में अभिव्यक्त हुए हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर कवयित्रियों की कविताएँ : नारी और प्रेम :

हर व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब वह स्वतंत्रतापूर्वक बुलंद स्वर में अपनी बात कहता है । दुर्भाग्य से स्त्रियों के जीवन में यह स्वातंत्र्य काल बहुत देर से आया, परन्तु जब वे अपनी बात कहने के लिए स्वतंत्र हुईं तो उन्होंने अपने मन का हर कोना अपने लेखन के माध्यम से खोल दिया ।

प्रेम इन लेखिकाओं का प्रिय विषय रहा है । प्रेम में स्त्रियाँ स्वयं को भी भूल जाती हैं । ‘कमला सिंघवी’ की कविता “मन करता है” की कुछ पंक्तियाँ देखिए, जिनमें उनकी नायिका प्रेम में अपने प्रेमी का हर दुःख अपना लेना चाहती है -

“कितनी बार मेरा मन किया है कि,
तुम्हारी हर मुसीबत को अपने दामन में छुपा लूँ
तुम्हारी परेशानी पर पड़ी हुई
हर शिकन को
अपनी हथेली पर बिछा लूँ”[i]

प्रेमिका के हृदय की पीड़ा को ‘इंदु सिन्हा’ जी कुछ इस तरह अभिव्यक्त करती हैं -

“जिंदगी मेरी हुई बनवास जैसी
और मेरा मन अकेला हो गया है ।
रेत से सुख झर रहे हैं हाथ से,
दर्द की राहों का फैला सिलसिला
आँख से आँसू के मोती गिर रहे

बढ़ गया है तेरा मेरा फासला ।”[ii]

‘उषा कांता’ की कविता “मैं आज भी नारी हूँ” में प्रेमी की प्रतीक्षा में आकुल प्रेमिका की संवेदना देखी जा सकती है -

“मैं मुट्ठी में
कोई गीत बंद किए
बैठी थी तुम्हारे लिए
जो..
टूटे हुए पंखों वाली
फ़ाख्ता बन बीच रास्ते में ही
गिर गया था ।”[iii]

वर्तमान समय में प्रेम में बहुत परिवर्तन आये हैं । प्रेम धीरे-धीरे महज शारीरिक संबंधों का पर्याय बनता जा रहा है । कवयित्री ‘कुसुम अंसल’ अपनी एक कविता में ऐसी प्रेमिका का चित्रण करती हैं जिसका प्रेमी उसे पूरी तरह पा लेने के बाद छोड़कर चला जाता है । प्रेमिका अभी भी प्रेमी के साथ बिताए गए क्षणों को जीती है -

“जो उठकर चला गया
मेरे लिए तो नहीं
ना ही मेरा है
रचयिता ने रचा
तुमने भोगा
और एक तरह से मैंने जिया भी ।”[iv]

नए प्रेम की तलाश में प्रेमिका को छोड़कर चले जाने वाले ऐसे ही एक प्रेमी का चित्रण ‘क्रान्ति त्रिवेदी’ की कविता “जो किसी का भी हो” में मिलता है -

“एक दूरदर्शी पखेरू की नाई
डाल छोड़ फैला के पंख उड़ गए
तुम्हें थी किसी और जगह
उजास भरी गुनगुनी ग्रीष्म की तलाश ।”[v]

प्रेमी के जाने के बाद उपजे अकेलेपन की पीड़ा इन कवयित्रियों की कविताओं में अपनी पूरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त हुई है । यह अकेलापन कई बार आदत में शामिल हो जाता है और तब अपनों के बीच भी अकेलापन अपनी गिरफ्त में ले लेता है । 'सुमति अय्यर' की कविता "नौ" की यह पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं -

"जानते हो?
मेरा यह अकेलापन
बेहद जिद्दी है,
और जब तुम आते हो,
इसे फुसलाकर सुला देती हूँ
तुम्हारे जाते ही, यह जागकर चिपट जाता है ।"[vi]

"कात्यायनी के प्रेम सम्बन्ध प्रेमचन्द कालीन प्रेम की भाँति सीधा और सरल नहीं है । आर्थिक-सामाजिक जीवन की विसंगतियों के कारण उसमें जटिलता और उलझन आ गयी है, उसकी प्रेरणाओं में स्वार्थ और परिस्थितियों ने भी स्थान ले लिया है, और इसी कारण कभी-कभी प्रेमियों के मिलन द्वारा भी उसका समाधान संभव नहीं होता ।"[vii]

प्रेम के वर्तमान स्वरूप पर विचार करते हुए 'कात्यायनी' कहती हैं "आज प्रेम का रूप बदल गया है । अब प्रेम, प्रेम न रहकर सेक्स हो गया है और अपने इसी रूप में जीवन की समस्त गतिविधियों का संचालक, नियामक बन गया है । कहने का मतलब यह है कि युग, परिवेश के बदलाव के साथ प्रेम के स्वरूप और उसके प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ गया है । कविता "रात के संतरी की कविता" को इस दृष्टिकोण से देखा जा सकता है -

"एक सुनसान सड़क पर एक युवा स्त्री से
एक युवा पुरुष कह रहा है
मैं तुम्हें प्यार करता हूँ.."[viii]

स्वातंत्र्योत्तर कवयित्रियों की कविताओं में प्रेम का जो स्वरूप मिलता है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इस समय तक प्रेम हृदय की वस्तु न रहकर बुद्धि की वस्तु हो गयी है । "कहा जा सकता है कि आज का प्रेम शरीर चेतना से आरंभ होता है और परिस्थितियों की कृपा पर जीता मरता है ।"[ix]

इसी प्रेम के यथार्थ रूप को कात्यायनी ने कविता "यथार्थवादी प्रेमी की कविता" में चित्रित किया है -

"प्यार करना
आसमान तक ऊपर उठ जाना
जैसे कि / जरूरी है
प्यार करते हुए / धरती पर रहना"[x]

भले ही अब पहले की तरह प्रेम-मार्ग में बाहरी बाधक तत्व परिवार, समाज, कर्तव्य, नैतिकता आदि नहीं हैं परन्तु प्रेम के संबंध में जीवन में जो परिवर्तन आया है उसमें परिस्थितियों ने भी स्थान ले लिया है । 'गगन गिल' की निम्न कविता में इस भाव का बेहद यथार्थ रूप दिखता है -

"बचा कर जख्म से ले आए भी
सच झूठ अगर
तुम्हारे द्वार तक तो आ जाएंगे
कैसे पहुंचेंगे मगर भीतर तक?"[xi]

स्वतन्त्रतापूर्व कविता में स्त्री का प्रेम आदर्शवाद, त्याग, समर्पण आदि के खोल से ढँका हुआ था परन्तु स्वातंत्र्योत्तर कविताओं में यह छवियाँ टूटती हुई दिखती हैं । स्त्री व पुरुष के प्रेम की संवेदनाएं समान रूप से प्रकट होती हैं । स्त्रियाँ भी खुलकर अपनी अनुभूतियों को प्रदर्शित कर पाती हैं । 'गगन गिल' की कविता की इन पंक्तियों में इस भाव को देखा जा सकता है -

"तुम्हारे सीने की दीवार पर
कभी तुमसे छिपकर
कभी तुम्हें दिखकर
अधूरा एक नाम
वहीं हम लिखेंगे
अपनी देह के एकांत में
जो तुम हो / नहीं हो
उसी संग हम रहेंगे ।"[xi i]

स्वतंत्रता पूर्व कविता में प्रेम कभी आत्म-बलिदान तो कभी समर्पण के रूप में आता है । प्रेम को दिव्य, अलौकिक माना जाता था । पवित्र प्रेम को काम व वासना से सर्वथा परे भाव माना जाता

रहा । आधुनिक कविता में यह रूप बदला है । प्रेम वायवीय न रहकर अपने वास्तविक रूप में आवश्यकता के रूप में सामने आता है । प्रेम में 'काम' को भी बराबर महत्व दिया जाने लगा । स्वातंत्र्योत्तर कवयित्रियों के लिए "काम संबंध का चित्रण किसी प्रकार की नैतिकता से जुड़ा हुआ नहीं रह गया है । उसके लिए, व्यक्ति के लिए यौन संबंध उसी तरह सहज तथा स्वाभाविक है जिस तरह उसकी अन्य आवश्यकताएँ"[xiii]

युग बदलने के साथ ही प्रेम के स्वरूप में भी बहुत परिवर्तन आया है । युगीन यांत्रिकता और परिस्थितियों से संक्रमित प्रेम में निष्ठता का अभाव दिखता है । सच्चा प्रेम दुर्लभ हो गया है । ईमानदार साथी की तलाश तमाम कवयित्रियों की कविताओं में दिखती है । सच्चे प्रेम की तलाश में भटकती लड़की का एक चित्र इन पंक्तियों में देखिये -

"हर बार उसे लगता है
अबके दीखने बंद हो जायेंगे
उसे ज़िंदा आदमियों के जलते कंकाल
अबके वह जिसे छुएगी
वह सुख होगा
ख़ालिस सुख"[xiv]

आज व्यक्ति जीवन की तमाम अनिश्चितताओं के बीच कुछ पल में ही जीवन की सारी खुशियाँ पा लेना चाहता है । नारियों ने सामाजिक वर्जनाओं की बेड़ियाँ तोड़ यौन-समागम को सहज स्वीकार कर लिया है । प्रेम की परिणिति को उन्ही कुछ पलों में बांधकर रूपायित करने में आज कवयित्रियों को अपराध-बोध नहीं होता । गगन गिल की कविता "उसे कुछ नहीं चाहिए था" में प्रेम का ऐसा ही चित्र दृष्टव्य है -

"उसने उससे चीख-चीखकर कहा
मुझे सिर्फ़ तुम चाहिए हो ।
बर्फ़ीले तूफ़ान के बावजूद
वह पिघल गया धीरे-धीरे
सुबह हुई / वहां कुछ नहीं था
उसे कुछ नहीं चाहिए था ।"[xv]

‘गगन गिल’ की कविता “प्रेम तो नहीं ये लड़की” में नारी-जीवन की भीतरी-बाहरी विसंगतियों, अंतर्विरोधों व कटुताओं की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है । आधुनिक नारी अपने स्वत्व और अपने अधिकारों के प्रति सजग है । अपनी स्वतंत्रता के प्रति सचेत नारी अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीना चाहती है । “आधुनिक युग में नारी निर्भीक होकर व्यक्ति रूप में अपने अस्तित्व एवं स्वातंत्र्य की रक्षा के प्रति जागरुक है ।”[xvi]

यह कवयित्रियाँ कविता के सकारात्मक विकास के प्रति आश्वस्त करती हैं । कविता आज जहाँ पहुंची है वहां पहले नहीं थी । इन कवयित्रियों ने कविता को सबसे सूक्ष्म, प्रासंगिक और सार्थक विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया है । ये कविताएँ सीधे जीवन से जुड़ी हैं । इन कविताओं में नारी जीवन के फूल भी हैं, शूल भी हैं । धूल, कीचड़, सुन्दरता, कुरूपता, हास, रुदन आदि सभी कुछ इन कविताओं का विषय बनता है ।

“स्वातंत्र्योत्तर स्त्री लेखन वैविध्यपूर्ण एवं गंभीर से गम्भीर चुनौती से टकराता नजर आता है । इसके वैविध्य में वैचारिक ऊष्मा नजर आती है ।”[xvii] इस स्थिति में स्त्री-पुरुष न तो एक दूसरे को पूरी तरह स्वीकार कर पाते हैं और न ही अस्वीकार । इस स्वीकार व अस्वीकार के बीच फंसे स्त्री पुरुषों की छटपटाहट ही इनकी नियति बन जाती है । “एक इच्छा चूड़ियों की” कविता में पति-पत्नी के बीच का त्रास स्पष्ट है -

“आदमी कहाँ है उस लड़की का
आदमी जिसका मातम उसकी धड़कनों में है
और इच्छा जिसकी उसकी चूड़ियों में
आदमी उसका फंसा है
किसी दूसरी देह में किसी दूसरे सपने में ।”[xviii]

प्रेम में पुरुष ने सदैव स्त्री को अपने अनुसार ही ढालना चाहा है । पति का वर्चस्व बनाए रखने की यह चाहत धीरे धीरे पति-पत्नी के प्रेम की ऊष्मा को सोख लेती है और परिणामस्वरूप संबंधों में प्रेम का स्थान कड़ुवाहट ले लेती है । इस काल की कवयित्रियों ने ऐसे ही न जाने कितने यथार्थ शब्दचित्र गढे हैं जिनमें पति पत्नी के मध्य का प्रेम शीतयुद्ध में बदलता नज़र आता है । ‘कमल कुमार’ की कविता “पत्नी” में नारी नियति का यह यथार्थ चित्र देखिये -

“तुम कारपेट की तरह / बिछी रहो
परदे की तरह / लटकी रहो

शेंडलियर सी / उजागर रहो
तुम कितनी सुशील हो
धर्मपरायण हो
मेरी पत्नी हो
दुधारू गाय हो ।"[xix]

पति-पत्नी के सम्बन्ध में ऊष्मा की कमी को 'सुमति अय्यर' की इन पंक्तियों में स्पष्ट देखा जा सकता है -
"हम दोनों दो समानांतर रेखाओं की तरह
साथ चलते रहते हैं
पर कभी मिल नहीं सकते
कोई बिंदु उन्हें जोड़ नहीं सकता
पर मैं जानती हूँ
हमारे सम्बन्ध जुड़कर भी ।"[xx]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आलोच्य काल की कवयित्रियों ने स्त्री के व्यक्तित्व को विभिन्न शेड्स देने का प्रयास किया है । नारी के प्रत्येक रूप को इन कविताओं की विषय वस्तु बनाकर पूरी इमानदारी से उनके आतंरिक व बाह्य अनुभूतियों को शब्दों में पिरोया है । यह कहना अधिक उचित होगा कि कठोर यथार्थ को कोमलता में लपेटकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है । वस्तुतः स्वयं स्त्री होने के कारण ही कवयित्रियाँ स्त्री और उसके संबंधों को इतने सशक्त स्वर दे पायी है ।

सन्दर्भ :

[i] प्रतिनिधि कविताएँ-84, संपादक – इंदु जैन, राजी सेठ आदि, पृष्ठ : 41

[ii] जिंदगी मेरी हुई वनवास जैसी, इंदु सिन्हा, पृष्ठ : 45

[iii] प्रतिनिधि कविताएँ-84, संपादक – इंदु जैन, राजी सेठ आदि, पृष्ठ : 21

[iv] वही, पृष्ठ : 33

[v] वही, पृष्ठ : 44

[vi] मैं तुम और जंगल, सुमति अय्यर, पृष्ठ : 24

[vii] इस पौरुषपूर्ण समय में, कात्यायनी, पृष्ठ :16

[viii] वही, पृष्ठ : 20

[ix] साठोत्तरी हिंदी कहानी, डॉ. विजय द्विवेदी, पृष्ठ : 88

[x] इस पौरुषपूर्ण समय में, कात्यायनी, पृष्ठ : 34

[xi] यह आकांक्षा समय नहीं, गगन गिल, पृष्ठ : 108

[xii] वही, पृष्ठ : 112

[xiii] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में मानव प्रतिमान, हेतु भारद्वाज, पृष्ठ : 234

[xiv] एक दिन लौटेगी लड़की, गगन गिल, पृष्ठ : 38

[xv] वही, पृष्ठ : 64

[xvi] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में मानव मूल्य और उपलब्धियां, भगीरथ बडोले निर्मल, पृष्ठ : 16

[xvii] स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृष्ठ : 186

[xviii] एक दिन लौटेगी लड़की, गगन गिल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ : 15-16

[xix] कविताएँ 84, संपादक – इंदु जैन, राजी सेठ आदि, पृष्ठ : 52

[xx] मैं तुम और जंगल, सुमति अय्यर, पृष्ठ : 22-23